राजमाता रानी दुर्गावती बलिदान-दिवस

लक्ष्मण राज सिंह मरकाम ‘लक्ष्य’

मई 1545 ईसवी को शेरशाह सूरी ने जब कालिंजर पर हमला किया तब गढ़ा-कटंगा राज्य की सेनाओं ने उनके रसद मार्ग रोक दिए थे और गढ़ा कटंगा राज्य व बाँदा राज्य की सेनाएँ सम्मिलित मोर्चे में लड़ रही थीं, जिसमें राजा संग्रामशाह व कुँवर दलपतशाह भी सम्मिलित थे। इस लड़ाई में राजमाता रानी दुर्गावती भी शामिल होना चाहती थीं, मगर उस समय गर्भवती थीं। 22 मई, इस युद्ध में दिल्ली का अफगानी राजा बारूदी विस्फोट में मारा जाता है। मान्यता है कि गोरिल्ला गोठ तीरंदाजों ने उसके बाद तोपखाने पर अग्निबाणों से हमला कर दिया था जो कालिंजर की प्राचीर पर चंदेल सेनाओं का साथ दे रहे थे। रानी दुर्गावती का जन्म 5 अक्टूबर 1524 को कालिंजर के राजा कीरत सिंह के यहाँ माना जाता है। इनको राजा शालीवाहन के नाम से भी पहचाना जाता है। चूँकि राजमाता का जन्म शारदीय नवरात्रि की अष्टमी को हुआ था इसलिए उनका नाम दुर्गावती रखा गया। उनका विवाह गढ़ा कटंगा राज्य के राजकुमार दलपति शाह से हुआ जो नागवंशी राजगोंड क्षत्रिय थे।

राजमाता रानी दुर्गावती के ससुर राजा संग्रामशाह का राज्यारोहण 1480 ईसवी में हुआ, इस समय से मंडला और जबलपुर के राजा थे, मगर जल्द ही उन्होंने 52 (बावन) और गढ़ पर विजय हासिल की और कुल 54 जिलों तक अपना राज्य विस्तार कर लिया।

राजा संग्रामशाह द्वारा विजित बावन गढ़ों में गढ़ा, मारुगढ़ पचेत गढ़, सिंगौर गढ़, अमोदा, कन्नौज, बाघमार, टीपागढ़ रायगढ़ परतापगढ़, अमरगढ़ देवगढ़ पाटनगढ़, फतेहपुर, निमुपागढ़ भंवरगढ़ वरंगी, घुसौर, चौरई (छिंदवाड़ा), इंगरताल करवागद, झंजन गद, ताफागढ़, सोटागढ़, दियागढ़, पावीगढ़, शाह नगरा, धमोनी, माड़ियादी गढ़ाकोटा, इटावा (बिना) गढ़ पहरा दमोह रहतीरानगीर, शाहगढ़ खिमसाला गढ़, गन्नीर, वारीगढ़, चौकीगढ़, राहतगढ़, मकडाई, कारुवाग, कुरवाई, रायसेन, भोरासों, भोपाल ओपदगढ़, देवरी (महराजपुर) गौरझामर बौकागढ़, पानागढ़ (नरसिंगपुर)।

राजा संग्रामशाह ने अपने समय चौकोर सोने और चाँदी के सिक्के चलवाए, टकसाल मंडला और गढ़ा कटंगा में थी। आईने अकबरी में उल्लेख है गढ़ा कटंगा में लोग सोने में और हाथियों में कर देते हैं। राज्य की कुल उपज इतनी है कि गुजरात और दक्कन की अन्न की माँग को पूरा कर दे। राजा संग्रामशाह कूटनीतिक दूरदर्शिता के माहिर थे। तारीख-ए-सतातीनए अफगाना में वर्णन है कि इब्राहीम लोदी का भाई शहजादा जलाल, जब भाग कर राज्य में छुपा, तब उसे पकड़ कर वापस आगरा भेज दिया और संधि कर ली। संग्रामशाह का निधन 1541 ईसवी में हुआ। सीमावर्ती किसी भी राजा ने उसके राज्य पर आँख उठाने की चेष्टा नहीं की, राजा संग्रामशाह एक कठोर राजा थे। न्यायप्रिय थे मगर इतिहासकारों ने उनके बारे में कभी उचित वर्णन नहीं किया।

राजा संग्रामशाह को अपने ज्येष्ठ पुत्र को राज प्रबंधन कौशल सिखाने का पूरा समय मिला। वे कई लड़ाइयों में उनके साथ रहे। उनकी समाधि सिंग्रामपुर गाँव में ठाकुर बहर/बावड़ी के पास बूढ़े बड़ के नीचे है।

1541 में राजा संग्रामशाह की मृत्यु के बाद राजा दलपति शाह का राज्यारोहण हुआ। सीमावर्ती राज्य की चंदेल राज्य कन्या से उनका स्वयंवर विवाह हुआ जो तत्कालीन राजाओं को स्वीकार्य नहीं था। फिर भी गढ़ा राज्य इतना शक्ति संपन्न था कि किसी ने इस बात का खुल कर विरोध नहीं किया। 1542 में रानी दुर्गावती से विवाह उपरांत उन्हें एक पुत्र हुआ जिसका नाम वीरनारायण रखा गया।

जब वीरनारायण केवल पाँच वर्ष का था तभी 1548 में सर्प दंश से दलपति शाह का आकस्मिक निधन हो गया। अपने नाबालिग पुत्र का राज्यारोहण करके, रानी दुर्गावती ने उसकी संरक्षिका के रूप में राज्य सँभाला। अब तक राज्य की शक्ति से डरकर रहने वाले बाज़ बहादुर ने रानी को कमजोर समझ कर 1555 और 1560 ईसवी में दो बार हमला किया। दोनों बार उसे हार का सामना करना पड़ा। मियाना अफगान जो अब सिरोज में आकर बस गए थे, उन्हें बाज़ बहादुर से खतरा था। उन्होंने रानी दुर्गावती से प्रश्रय माँगा और सहायता की गुहार लगाई। रानी के डर से बाज़ बहादुर ने कभी मियाना अफ़गानों पर हमला नहीं किया और इस बात के लिए मियाना अफगान हमेशा के लिए राज्य के वफादार बने रहे।

राज्य की शक्ति का लाभ रानी ने यहाँ की जनता को दिया। कुल कर का एक चौथाई हिस्सा जन सुविधाओं में खर्च करने के कारण, राज्य में तालाबों, बागानों, विद्यालयों, अच्छी सड़कों, बाजारों की समुचित व्यवस्था थी। इस समय स्वर्ण मुद्राओं में कर लेने वाला गढ़ा कटंगा राज्य अकेला था। समकालीन मुगल भी चांदी के सिक्के बताते थे। राज्य की समृद्धि की सूचना मुग़ल दरबार तक पहुँची और अकबर ने अपने दो गुप्तचर रानी के दरबार में भेजे। वे रानी को तो नहीं डरा पाए, मगर रानी के दरबार से कुछ मंत्रियों को लालच देने में सफल रहे।

अब्दुल मजीद आसफ़ खाँ, उत्तर प्रदेश के कड़ा माणिकपुर का सूबेदार था। उसने रीवा राज्य के शासक रामचंद्र को पराजित कर पूरा राज्य अपने अधिकार में कर लिया था। अकबर राजस्थान के राजपूतों को अपने अधीनस्थ करने में लगा था, मगर उसे उनसे लड़ने के लिए बहुत अधिक धन की आवश्यकता थी। और दो तरफ के आक्रमण के लिए वो दक्षिण से भी राजपूतों को घेरना चाहता था। इसकी सूचना रानी को भी मिली जिसका संदेश उन्होंने राजपूत रियासतों को भी दिया। मगर आपसी गृह-युद्ध और कलह में से वे बाहर नहीं निकले। अंततः रानी को ज्ञात हो गया था कि या तो सम्मानपूर्ण युद्ध या तिरस्कारपूर्ण संधि ही एकमात्र रास्ता थी।

इसी बीच आसफ़ खाँ ने गढ़ा पर आक्रमण करने की अनुमति ले ली। पहले उसने इस राज्य के विषय में संपूर्ण जानकारी प्राप्त की फिर एक बड़ी मुग़ल फौज लेकर, दमोह की ओर से गढ़ा राज्य पर चढ़ाई कर दी।

रानी के गुप्तचर, रीवा की बजाय दमोह से इस आक्रमण की पूर्व सूचना समय पर नहीं दे पाए। मुग़ल सेनाओं के दमोह पहुँचने पर भी वो भयभीत नहीं हुई। रानी ने रीवा की तरफ से और दक्षिण के क्षेत्रों से अपनी सेनाओं को बुलावा भेजा मगर दिल्ली में रानी के एक पुराने मंत्री ने कई सूबेदारों को रानी के साथ शामिल न होने के लिए मना लिया। रानी को आसफ़ खाँ ने संधि का न्योता दिया, मगर रानी फिर भी भयभीत नहीं हुई। आसफ़ खाँ के पास पचास हजार पैदल सेना और घुड़सवार थे। उसे राज्य की सीमावर्ती मुसलमान राजाओं का सहयोग प्राप्त था जिसमें मुबारक भाती खान, मुहम्मद मुराद खान, वजीर खान और आक मोहम्मद प्रमुख थे। मुगल सेना के पास बड़ी तोपें और बंदूकें थीं। पूरी पैदल सेना आधुनिक शस्त्रों के प्रयोग में निपुण थी।

मुग़ल सेना के पास चीनी बारूद और पुर्तगाली बंदूकें थीं। उसके पास जमुरिन तोपची भी थे जो बारूदी शस्त्र कौशल में पारंगत थे। रानी के पास भी कुछ बंदूकें थीं, मगर उसकी सेना पारंपरिक युद्ध-कौशल में ही पारंगत थी। रानी चूँकि चंदेल राजपूत थी, उनकी व्यूह-रचना संग्रामशाह की घुड़सवार व्यूह-रचना से भिन्न थी। रानी अन्य राजपूती रणनीति के तहत हस्ती सेना पर अधिक विश्वास करती थीं। मगर तोप सेना के सामने हाथी विदक जाते थे और नुकसान अधिक होता था।

इतनी विकट स्थिति के बाद भी रानी ने हार नहीं मानी और सिंगौरगढ़ की सात घाटियों के पास, मुग़ल सेना को रोकने का प्रयास किया। एक दिन के युद्ध में रानी को विजय भी मिली। मुग़ल सेना के पाँच हजार सैनिक मारे गए जबकि रानी को बहुत कम नुकसान उठाना पड़ा। रानी को इब्राहीम लोदी के एक लाख और बाबर के तीस हज़ार सैनिकों के बीच के युद्ध का ज्ञान था। इसीलिए जब मुग़ल सेना ने दोबारा हमला किया तब रानी ने अपनी सेना को पीछे हटकर बरेला, जबलपुर जाने का हुक्म किया। रानी केवल पाँच सौ सैनिकों के साथ सिंगोरगढ़ में डटी रहीं। दूसरी रात रानी जब हाथियों से मुगल सेना पर चढ़ाई पर रणनीति बना ही रही थीं कि खबर आई उनकी हस्ती सेना के सेनानायक अर्जुन सिंह बैस मारे जा चुके हैं, बचे हुये सेनानायकों में रात्रि में युद्ध का कौशल नहीं था। इसीलिए रानी को ये रणनीति छोड़नी पड़ी। रानी ने सैनिकों को मंडला कूच करने का हुक्म दिया मगर रानी के एक सेनापति बदन सिंह मुग़लों से मिल गए और उन्होंने नरई नाले के बाँध को तोड़ दिया। रानी दो तरफ से मुगल सेनाओं से घिर चुकी थी। अंतिम समय नरई नाले का युद्ध हुआ रानी की सेना को अपार हानि हुई। रानी चाहतीं तो हस्ती से उतर कर अपनी जान बचा सकती थी मगर उन्होंने एक कायर की तरह जिंदा दुश्मन के हाथों आने की जगह मृत्यु को ही अधिक श्रेयस्कर समझ 24 जून 1564 को अपने प्राण न्योछावर कर दिए। रानी के साथ तीन हजार सैनिकों के साथ-साथ मास खान मियानी, अफ़गान मुबारक, बलोच कुँवर, कल्याण बोल चक्रमणि, कलचुरी खान, जहान हकीत और महरूस ब्राण भी युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। आसफ खाँ सबसे पीछे पुरवा गढ़ा में पड़ाव डाले हुये था। रानी की वीरगति की खबर सुनते ही उसने गढ़ा पर लूट का आदेश दिया। जो भी लोग बरंगी के जंगलों में जाने में सफल नहीं हो पाए थे उनको घरों से निकाला गया, कई महिलाओं ने आत्महत्या कर ली, कई को जिंदा पकड़ लिया गया। लगभग 18 हजार पुरुषों को

बंदी बनाकर सूपाताल के नजदीक खड़ा किया गया, जिहोंने भी मुस्लिम धर्म नहीं स्वीकार किया उनके सिर धड़ से अलग कर दिए गए और सभी धड़ों से एक स्तंभ बनाया गया।

आसफ़ खाँ गाजी नहीं था, मगर इस बड़े काफिर समूह को कत्ल करने के लिए उसे गाजी की उपाधि दी गई। गाजी की उपाधि मिलने के बाद उसने मदन महल पर हमला किया और खजाने को लूट लिया। ये रात इतनी भयानक थी कि रात-भर महिलाओं पर सैनिकों ने अत्याचार किए। लगभग आधी महिलाओं के शवों को उसी रात सूपाताल में निर्वस्त्र कर फेंक दिया गया। बाकी बची हुई महिलाओं को दिल्ली भेज दिया गया। आसफ़ खाँ ने गढ़ा राज्य को जीतकर पूरे प्रशासन की बागडोर अपने हाथ में ले ली। फिर उसने चौरागढ़ की ओर प्रस्थान किया। असल में चौरागढ़ ही उसका मुख्य उद्देश्य था क्योंकि वहाँ पर गड़ा राज्य का मुख्य खजाना था। वहाँ वीरनारायण ने मोर्चा सँभाला रखा था। वीरनारायण के साथ-साथ आधार कायस्थ भी शहीद हो गए। सारी महिलाओं ने जौहर कर लिया, आसफ़ खाँ ने वीरनारायण की नवविवाहिता को और एक और कन्या को पकड़ लिया। उन्हें अकबर के हरम में भेज दिया गया।

अकबरनामा में लिखा है कि अकबर को गढ़ा से अकूत संपत्ति मिली, इतनी संपत्ति अभी तक एक ही राज्य से कभी प्राप्त नहीं हुई थी। इसी संपत्ति से अकबर ने राजस्थान और चित्तौड़ पर लड़ाई के लिए सेना तैयार की। चौरागढ़ की हार केवल गढ़ा की हार नहीं थी, ये दिल्ली सल्तनत के बाद क्षेत्रफल की दृष्टि से दूसरे सबसे बड़े राज्य की हार थी। एक फर्क है कि रानी ने अपने राज्य को बचाने के लिए युद्ध की किसी संधि का इंतजार नहीं किया अर्थात् उन्होंने युद्ध और आत्मसम्मान को चुना।

राजमाता रानी दुर्गावती विदेशी आक्रमण के समय अपने स्वधर्म और स्वाभिमान की रक्षा के लिए, यह जानते हुए भी कि सेना है, उन्होंने अपना राष्ट्र-धर्म, स्वधर्म शासनकाल में जनसाधारण के सर्वांगीण विकास के लिए अनेक विद्यालय खुलवाए, तालाबों का निर्माण कराया, उन्नत शासन व्यवस्था स्थापित की। सुशासन के लिए उनका राज्यकाल जाना जाता है। दक्षिण के कई संतों ने उन्हें प्रजावत्सला की उपाधि दी। कठोर शासन व्यवस्था के कारण उन्हें राजमहिषी की उपाधि प्राप्त हुई। चूँकि वैधव्य उपरांत उनके ही हाथों में शासन की बागडोर थी इसलिए उन्हें राजमाता रानी दुर्गावती कहा जाता है। इनका बलिदान इतिहास की अनूठी मिसाल है। इसे सदियों तक याद रखा जाएगा।

॥ राजमाता रानी दुर्गावती के चरणों में सादर वंदन॥

संदर्भ ग्रंथ

•वीरांगना रानी दुर्गावती, डॉ. दिनेश मिश्र, नमन प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018

•गढ़ा का गोंड राज्य, डॉ. सुरेश मिश्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008

लक्ष्मण राज सिंह मरकाम 'लक्ष्य'

उप सचिव, मध्यप्रदेश शासन